रुर रुर महुर एव एव पहुर

धे













मीभम्-ग्रम्-मद्भग-हगवश्चम्-परभुगगउ-भुलप्याय-भवःः-पी०भा मी-कप्ञी-कप्भकेष्टि-पी०भा एगम्ह-मी-मद्भगमण्ट-भ्राभि-मीभ०-मंभुपनभा

मभ्उभिद्विग-म्वी-पागवलभा

Announcement regarding parayanam to be done on days of Amritasiddhi Yoga as directed by Jagadguru Shri Kanchi Kamakoti Peetadhipati Shri Shankara Vijayendra Sarasvati Shankaracharya Swamigal

Time is the basis of all actions. As is well known, actions executed at the proper time bear more fruit.

In the cyclic rotation of time, along with the bad combinations of grahas and nakshatras that indicate the probability of upcoming difficulties, good combinations that grant benefits in multiples also arise. The sages who know this subtle nature of time have done us immeasurable anugraham by telling us about this via shastram. They have shown the way to protect ourselves for times when difficulties may arise, and to attain happiness by making efforts to do good deeds in beneficial times.

Among such good combinations are the Amrita Siddhi yogas of certain weekdays and nakshatras. They are Sunday-Hasta, Monday-Mrigashirsha, Tuesday-Ashvini, Wednesday-Anuradha, Thursday-Pushya, Friday-Revati, Saturday-Rohini.

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणी च। सोमे च सोम्यं भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगाः॥

As per the reading सोमश्रवण्याम् in the same verse, Monday-Shravana is also praised as a special yoga. Good deeds performed on such yogas become especially strong in protecting and nourishing us.

For instance, in Devi Atharvashirsha, it is said भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जस्वा महामृत्युं तरित, that is, one can cross even a gruesome death by doing parayanam when Tuesday and Ashvini join.

Therefore on these potent days, Shri Acharya Swamigal instructs to perform the following Devi-related parayanas as per achara and tradition and achieve both loka kshemam and one's own kshemam.

- o Do parayana of all texts given below as far as possible.
- If unable to do on a single day, it may be done by starting or finishing on the day with Amrita Siddhi yoga.
- This is to be done after completing snanam, sandhyavandanam and other nitya karmanushthanam.

Texts for parayanam

- 1. Durga Saptashati
- 2. Lalita Sahasranamam
- 3. Saundarya Lahari
- 4. Durga Stuti from Virata Parva of Mahabharata (see appendix)
- 5. Durga Chandrakala Stuti of Appayya Dikshitar (see appendix)
- 6. Durga Stuti from Bhishma Parva of Mahabharata (see appendix)
- 7. Durga Pancharatnam, composed by Shri Chandrashekharendra Sarasvati Shankaracharya Swamigal, 68th Acharya of our Shri Kanchi Kamakoti Moolamnaya Sarvajna Peetam (see appendix)
- 8. Mahishasura Mardini Stotram

9. Abhirami Anthathi (Tamil)

Naivedyam: Dadhi-annam (curd rice)

Please do the parayanam with sankalpam as given below and receive the Grace of Guru and Devi.

॥भद्वला

भभेपा ३ + पी ३ फ्रं रुगव द्याः एग म्भायाः प्भामिन -

- ० स्पानं म्विमार-निवृद्धि-भुवक-भिन्नमार-मिरुवृद्धें,
- ० भाग्रनं णित्रकालं ग्र चैद-विम्नाभ-पृष्टि-भिमृत्रभा, ग्रणित्रक-मङ्गीनं विनामार्त्र,
- उद्ग्-म्वा भव-लेक-बिभार्
- राग्डीयानं भठा-एनानं विभ्-निवृङ्गि-पुत्रक-मङ्काद्य-प्वृङ्गि-म्वाग गिठिक-ग्रमिक-ग्रम्ह्म्य-प्रिप्रभा, ग्रमङा-काद्येष्टः निवृङ्ग्रं
- ० रुपडीयानं भनुउः भनाउन-भभ्राय म्झ-रुक्तेः मरित् मूर्
- भत्रिपं मियमं गरुप्मा मिनुषं ग्र प्रिल्य-वन्तर्णभा मुनेगृ-वृक्त-पाप-प्रीवन-मवापुर्भा
- ग्रभाकं भठ-तुएभानं एम्-ग्र-काभ-भेष-ग्रुप-ग्रउविण-प्रधार-मिष्टुरं विवेक-वैराग्-मिष्टुरं

[६ गा-भपु-मडी-/ल लि उप-भरूभ्याभ-/भे तृ. द.-ल रूरी-/यणि श्विर तृ उद्भू गा भु डि-/म स्व प-तृ उद्भू गा भु डि-/६ गा छ त् कला भु डि-/भर्षि भाभ्य भि त् नी भे दे-/मरिका भु ग दि] भे दे- पा या या पं कि पि में



विम्नावम्-भंवद्भग-मभ्उ-भिम्नि-वेग-मिनान

```
2025-04-16 Wed उण राण-वेगः (प्रक्रभा गरुः)
                   में भम् वर्ण-वेगः 12:36▶
             Mon
2025-04-21
                   वृण न्य ण-चेगः►11:45
2025-05-14
             Wed
                   भेभम्बर्य-वेगः (पुरूभा मुरुः)
2025-05-19
             Mon
2025-05-23
                   रुग्रवडी-वेगः 16:01▶
            Fri
                   रुग्रवडी-वेगः (पुरूभा मणः)
2025-06-20
            Fri
                   में भभ्गमी मु-चेगः 21:05▶
2025-07-21
            Mon
                   गुरुपृधृ-वैगः 16:42▶
2025-07-24
             Thu
                   मेभभुगमीयु-वेगः (पुरूभा ग्रङः)
             Mon
2025-08-18
                   गुरुपृष्ट्-वेगः (पुरूभा गुरुः)
2025-08-21
            Thu
                   मिनिरें जिल्ली-चेंगः 10:09▶
2025-09-13 Sat
                   भेभभ्गमी गु-चेगः ▶ 07:29
2025-09-15 Mon
                   गुरुपृधृ-वैगः►06:30
            Thu
2025-09-18
                   मिनिरें फिल्पी-चेंगः►15:18
2025-10-11
             Sat
                   म् रिट्र पु-वेगः 17:47▶
2025-10-19
             Sun
                   ठेभामिनी-वेगः 12:32▶
2025-11-04
             Tue
                   मुम्द्रिकम्-वेगः (पुरूभा मुकः)
2025-11-16
             Sun
                   रेभामिनी-वेगः (प्रक्रभा मरुः)
2025-12-02
             Tue
                   म्रिट्रिं पु-वेगः ▶ 08:16
2025-12-14 Sun
                   वृण नुराण-वेगः 17:09▶
            Wed
2025-12-17
                   इण न्राण-वेगः (प्रक्रभा गुरुः)
2026-01-14
            Wed
                   भेभम्व~-वेगः 11:50▶
2026-01-19
             Mon
                   बृण नुराण-चेगः►10:51
2026-02-11 Wed
```

रुग रुग मद्भग एव एव एव मद्भग

2026-02-16 Mon भैभम्व" विगः (पुरूभा मरुः) 2026-02-20 Fri रुगुरवडी-वेगः 20:06► 2026-03-20 Fri रुगुरवडी-वेगः (पुरूभा मरुः)

॥यणि रिग-त्रउ-म् जग-सु उिः॥

वैमभुयन उवा छ

विगए-नगरं रभृं गम्बभाने वृणिहिरः। मभुवन्ननभा मितीं म्नां दि-छवनिम्नरीभा॥।

वमेरा-गर-भभुउं नारावण-वर-पि्याभा। नन्-गेप-मुले एउं भङ्गलुं मुल-वन्तीभा॥॥

कंभ-विम् वल्ल-करीभभ्रालं क्यं-करीभा।
मिला-उए-विनिकिशुभाकामं पृठि गाभिनीभा॥॥

वाभ्रावम् रुगिनीं मिवृ-भालृ-विरुधिराभी। मिवृभ्रा-एगं मिवीं।पक्त-पिएक-एपिणीभी॥मा

रुपावउपत्र पृष्ट व भूगित भम्म मिकाभी। उपा व उपवम प्राप्त पद्भिगाभिव म्युलाभी॥॥

भेंदुं प्राक्त हुवे विविष्णः भेंद्र-मभुवैः। मुभवू म्मन काङ्मी राष्ट्र मिवीं मकान्यः॥॥

नभे भुवर मे तुम्र तुभावि वृद्ध-ग्राविण्य। गला क्र-भम्, मा का रिष्क-ग्रान् निरुपन नि॥॥

गरुरुष्ट गरुवर् भीन-म्लि-पवैण्य। भव्य-पिम्क-वलचे केव्यसम्म-णियिल्याः॥

रुमि हिव यम पद्म नागयण-पिग्राः। भुगुपं रक्षादं म विमहं उव पि-मिगि॥॥॥

त्र्भृम्यवि-मभात्रभ्राम्यस्याः-मभात्रनाः विरुटी विपृले ग्रन्न मत्त्रम्य-मभुयो॥०॥

भारी म भद्भाष्ट्री भुरी विमुद्धा म या कुवि। भामं पन्मुकामक् विविधानुष्युणनि मा।००॥

मुद्भला हुं भुम्राहुं कम्म हुं य विद्धिया। यन्विम्यिचन स्वि भूषिन हे विरासमा०॥ भुतुष्टेन विग्निष्ट्रण कैम-बर्चेन मैठिना। हुस्क्षेत्र-वामेन मे्णि-भुद्रण गास्टा 10311 विद्यासम्म ग्राबस्चेन हैग्निवेठ भन्नाः। प्रस्ति मिगिप-पिस्कानाभुस्थिउन विगासमा। 10411

के भारं व्उभाभाय दि-मिवं पाविउं द्वया। उन द्वं भुवमे मिवि दिम्मः प्रमुमेऽपि ग्राल्या

र्ने कृ-रब् १९४१ म् १८४१ म्

एया द्वं विएया ग्रैव भम्भी ग्र एय-५्रा भभाषि विएयं रिष्ठ वर-राद्वं ग्र माभ्रभाणा

वित्रु यैव नग-म् ४ उव भू नं कि मम् उभा। कालि कालि भका-कालि मी ए-भंग्म-पमु-पि्य॥००॥

त्रुग्नयम् कुउँमुं वर-मा काभ-गारित्ती। कारावरुग् च ग्रा द्वां मंभूरिभृति भानवा॥००॥ प्राभित ग्रा च द्वां कि प्राउँ उत्तर कुवि। न उमा म्या के कि-ग्रिश् पृद्रेष्ठ ग्राउँगि वा॥३•॥

द्भागाउ रायम द्भा उउ दे द्भागा भूरा एकैं। का गुप्तिव्रवस्तानां भगानां य भठा क्रवे। द्भृष्टिका निरुद्धानां दे गडिः प्रभा नुल्लभा॥३०॥

र्ल-प्उरल क्रिंव का गुरिश्वी ध्रा।

य भूरित भक्षा कि न स्मिन्ति है नराः॥३३॥

है की गिः मी चितिः भिम्निस्विचित्तः भग्निति है।

भृग राद्रिः प्रानिस् स्ट्रिस् का गिः बभा स्या॥३३॥

नुलंश प्र बन्ननं भेंकं पुर्-नामं एन-ब्यभा। बृप्णि भुटुं रुषं प्रैव पृष्टिउ नामविधृमि॥उम॥ भे जं राष्ट्रश् परिक्षः मरणं द्वां प्पत्वान्।
प्णउम्च यमा भूषा उत हित भ्रम्वित ॥३५॥
इंकि भा पम्भपश् कि मट्ट मट्टा ठतभू नः।
मरणं ठत मे ह्वा मर्ग्ट ठकु-तक्क्व ॥३६॥
एतं भुडा कि भा हिती हिम्मयाभाभ पाप् त्वाम्।
उपगभ् उ राष्ट्रमिहं तहानभर्ती इ॥॥३॥

मबृक्य

म्व ग एना भक्त के भमी वं व ग नं प्रे। रुविधुटुग्निगर्मेव भम्मे विस्वभुव॥३३॥ भभ प्मामान्ति हिन्दु छ्वा के 1व-वार्षिनी भी। गण्टुं निश्वस्थं कुङ्ग केंकृम मिर्मिनीं प्रााउणा रु इिः मिल्डि रास्ता पीडिं प्प्रिमि प्रक्लाभा। भड़ा-प्मामा उ में पृभागे गृं ए रुविधृडि॥३०॥ य प्रभाग्नी स्वीत्र विषय के विषय कि विषय के वि उभं उस प्रमानि गण्या वृत्रपः मुउभा।३०॥ प्वामे नगर वाऽपि भर्मे मर्-भरूरा मप्तृं म्ज-कारु भागरे गरुने गिरी॥३३॥ व भूति धृति भंग राष्ट्र न् वषा कं ठवडा भूड़ा। न उपं म्नारं कि-गिमिन् लेक रिवधिता३३॥ इंद्रं भुँड्-वरं रुक्तं मुक्त्याम् वा पठ्ड वा। उमु भवा पि का दा पि भिम्नि या मृति पा परवा ॥ ३ म। भड़ी-प्भामाम् वः भवानी विराए-नगर भिद्धानी। न प्रमृति कुरवे नरा वा उनिवासिनः॥३५॥ उट्टक्त वरमः मिती वृणि श्विरभरिन् भभा। नकं तुर प्र पापुनं उर्देव राजिया।३०॥ แङित मीभन्भकारा उ विकाए-पत्रिक्ष पाद्भव-प्रवेम-पत्रिक्ष मध्भेरपृष्यः॥

॥मक्त-मुउ-म्जा-भुउः॥

मक्क्ष्य उबाग

ण रगम्- वलं म्र्युं युग्न्य मभ्यभिरुभा। मच्चनम् जिउ राय मुद्रे वयनभव्वी उपा

म्-हगवान्या

मुग्नियुद्धा भठागाठी भम्भाकिभृषि भिद्धः। प्रगास्याय मञ्जलं द्वाना-भेड्भ्दीरय॥॥॥

भक्क्ष्य उक् ग

ारवभ्केंऽच्चनः मह्नु वाभ्रःवेन पीभउा। यवडीट राषाडा पार्ःभेड्भाक क्राक्क्तिः॥आ

मक्त उक्य

नभमु भिम्न-मेनानि मुद्ध भन् ग-वाभिनि। कुभागि कालि कापालि कपिले कुभू-पिङ्गले॥मा

हर्-कालि नभपुर्ह भका-कालि नभी पुर्हे। प्राप्ति प्राप्ति नभपुर्हे उपि णि वर-विकिनि॥॥

का ट्रायनि भठा-ठाग करालि विषय एय। मिपि-पिम्ध-प्रष्ट-एर नाना ठरण-ठु पिउँ॥ ॥

मह-मुल-प्रातः एक-एकि-एकिए। गेपन्भुगुरः रष्टुषु नन्-गेप-कुलेम्हव॥॥

भिष्ठिं भिक्तं - पिंचे निट्टं के मिकि पीउ-क भिनि। मह-रूम केंक-भूषि नभमुँ, भु रू । पिंचे॥ ऽ॥

उमे माकभ्रि मुँउ तुमू कैएरु-नामिनि। किरएर्वि विरुपावि मुग्रभावि नभेऽभु उ॥७॥

वैर्य-मूडि भुक्ता-पूर्षः कृक्ताः एउ-वैर्याम। एभु-कएक-ग्रेडिंध निट्टं मिन्निक्षः ज्वाण्य।। वे रक्त-विम् विम् नं भठा-निम् ग्र मिलिन भी।
भून-भाउरगवि म् ज का ग्रा-वाभिनि॥००॥
भाषा-कारः भूण ग्रेव कला काश्व भरभुठी।
भाविदी वेम्-भाउा ग्र उपा वेमान उग्रुठे॥०३॥
भुडा,भि वं भठा-मिव विमुद्धनानुराञ्चना।
स्वे रुवे भित्रं वेड्री-प्भामामा राष्ट्री॥०३॥
कानुर-रुव-मृज्ये रुजानं ग्राल्येष् ग्र।
निट्ठं वभभि पाउन्ले वृद्धे स्विभि मानवाना॥०६॥
वं स्भूनी भेषिनी ग्र भाषा स्तीः मीभुष्वेव ग्र।

भक्त प्रावरी मैंव भाविदी एतती उषा।०५॥ उसिः पृक्षित्तिर्द्वीशिस्तर्द्वाम्याः द्वितित्ति। इतिद्वुदि-भरं भक्ष्वे वीकृमे भिम्न-मार्गणः॥००॥

भक्क्ष उक् ग्र

उउः पार्म् विस्व रुक्तिं भानव-वद्मला। मनुगिब-गउवाम गैविन्भाग्उः भि्रा०॥

मृबुग ग

 रुर रुर मद्भर एव एव एव मद्भर

न रुवं विमृड उभु भमा गण-कुलामि। विवाम एवभापेड वस्त्रे भृमृडि बन्ननाडां॥३३॥

म्नं उरि गावमं उपा ग्रेरिविभृगृरः। भङ्गमिविष्यिति हं लङ्गीं प्रिवेटि कवला भी॥उमा

म्रोगृ-उल-भभ्ने सीवस्त वस्-मउं उषा। एउस्त स्कंप्मास्टा उभया वृग्ममृ पीभउः॥उभा

यइ एम्ने म्ट्रिंडः का निस्ट इ व्हीः मीभुषा भिडिः। यँडे एम्नभुडः क्ष्मे यडः क्षम्भभुडे एयः॥३७॥ ॥७डि मीभम्मकारु रु रीभ्मपविष्य मीभम्मा-रुगवम्मीडा-पविष्य इयैविंमेऽपृष्यः॥



॥म्जा-ग्रान्कला-मुडिः॥

विषेठ्यीम्चर-पुष्टं विरुट्टी विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वर्गः विद्वरः विद्वरंगः विद्वरंग

महुरू नेन भरभी हरू-मभुवमृ
हुन्ने रिडा हगवर्राह-पिणन-लीलाभा।
विम्नम्री विपर्धापकरण प्रमुख्य भारा भभामु भए-केए हुने दिल्ही॥॥॥

प् दि स्प्रिष् निकिउँदि स्प-मिक्-लिमैंः एकीठविम् क्रिट्यापिल-लेक-गुप्रै । मभूत्र-मभ्-निकरा प्र उद्यायण-मैंः भारा भभाषु भिक्षानु-करी प्रमुखाः॥॥

प्राल य-मैल-उनया-उन्-का नि-मभ्रान्-केमे र्रिः कुवल य-म्रुवि-ग्राक्-र्रेजः। नागायणी नभर्राजिप्य-कल्प्-वल्ली मुपी उभावज्यु मुभुनिमुभुजन्नी॥म्॥ विम्निम्नगिंड भिर्णिष गु-कगींड यमुः नगरयणीं दृषि या नग्भिका द्विष्ठानि। भुजानि पद्भरू-कुवा या भुगिद्धिक्मि म्रुक्षानि पावक-भूषिम्म मिवं कर्ष्ट उप्भी॥॥

उद्गृहि-ह्येड-जनन-मृवन द्भकानि मंग्रह्म व्यापिल-हुड-जिडा व यमाः। मृजानुम्प-निगभानु-विह्यः ५०नि डां विम्न-भाउगभाष्यम्भिष्ठिभ्वीभि॥॥॥

य वैप्रिष्ठ-प्रक्तिः स्मिन्गिः द्विष-भेर-भभयन प्रकारिङम्। स्विष्ठाभ्-स्यामात्रिष्रुप-हमाः वैपम्हः॥॥ वैपम्हः॥॥

भुकं वधीवभरविन्-रुवाधि-म्, स्भा म्वतृ हितुपमं भ्रषः मभाणिः। म्वतप्रापद्धरारीस्-भनतृ-लार्ड् उपाधि-हित-उठणीं प्णभाभि भृषुणाऽ॥

भाकिभ्रडी-उन्-ठवं प्र ठठं प्र क्रुभा मृतिभ्रडें त्रिष्ट-रभाम्च्वडार-ठ्रम्टैः । मक्षामाकड-नवाकड-केएि-भक्ष्णुः मक्षाभमा मभिराबद्ध भंग विभम्ह्राजा

एउम्चिरिश्मीपलं लिगिपउं कि यभुः

मभुष्टिउं मह्न एव निविमिउं वा।

ह्नं ए उपयि ह्मुग्मधृमिधं

म्यः प्यस्रिउ ए मबभुभं रुष्टि उप्भाणिश।

यडा-प्रस्त-मुडि-नभमुडिक्स्वित् पीडाः पिडाभक-गमम-कराम्येऽपि। उभाभिप भुक-गुल्याम्डी वपंधि उभीभ्रम् उरुलीं मरलं प्रम्मा००॥ रुर रुर महर

का गुग्न-भण्न-म्, म्ह-लगुउया ज्वभनाः भग्नाम्च वा विणि-स्पेत्तः विभम्भगन्तिः यभाः प्यम् ग्राप्तः विभम्भगन्तिः भाग्ने भम्मा भू क्रिम्म भव-स्ग उत्ता-भविद्यी॥०३॥

बच्च वर्ष भरुडि भट्ट-रुच्च प्भक्ति विद्य-बच्च ग्र विविध्य ग्र भरुपेडण्या चड्-प्राप्ट-प्रस्पतिष्ठ प्रिकारभाकः भामिभभु-स्पानी मर्गंग रुवानी॥०३॥

गण्णभ्य-प्रिउ-पत्रग-गत्न-भेकः उद्गा-गर्ज-द्ग्य-द्ग्यनाद्भया य वेगः। प्रदृत्भिता द्युभल हुउ वड्ग-प्भाद्माडा भा भे मिया भकलभपृमुठं किल्पेउ॥०म॥

पापः प्लमृ-उनयः प्नरुद्धि भाभा महापि ज्युभयभागउ उद्गीउभा। यउा-मेवनेन रुयभिन्गियावपुउं उभामि-मेव-उरुणीं मरणं गंडेजिम्॥०५॥

यह्न-णुन-सं भाषभवापृभनतु-पुर्हैः भाकाद्री उभद्भुद-पिग्रिभाष्ट्रवापः। गोपाष्ट्रनाः किल यहक्तिन-पुर्थ-भाद्राः भाभि महा रुगवदी रुवदु पुभन्नाण्ठ॥

गाउँ प्पम् छडि भव्-विमः प्पवानां उन्नेष्ठ भ्रुविष्मित्नु-द्रुत्तिः प्लेष्ठ्। वृष्ट्र ग्र उम्हा-विभाषडां प्उनं नयत्रीभा यकामभामि-स्पनतीं सगडां रुस्ट डाभाण्या

रम-काले ५ र्मे ५ र्गा-ग्रन्-कला-पुठिः। महुवैरन्भद्रया भवापर्गा-विनिव ३वे॥००॥ ॥७ठि मीभर्भयु-सीबिउन्-विरागिष्ठा र्गा-ग्रन्-कला-पुठिः मभुत्ना॥



$\| \mathbf{L}_{1} \mathbf{T}^{T} - \mathbf{L}_{2} \mathbf{T} - \mathbf{L}_{3} \mathbf{T} \|$

उ पृप्त-वेगप्त्रगड म्यम्ना द्वामेव द्वितां भ्र-गुल्प्तिगुद्धाभा। द्वमेव मिकः परमिम्नरम् भाषा पाकि महिम्नार भेव-द्वादे॥।

द्भिमिकः म्डि-बाक्त-गीडा भकिद्भिलेकम् प्रः प्मज्ञा गुष्ठा परं हैभ मडः प्डिष्ठा भंगपाष्ठ भविष्ठिति भेष-द्भाष्ठि॥॥

पराज्भु मितिविविष्य म्यम मुराम्व-वानिष्य उ.म.वि म्पा भाराविकी स्वा-बल-क्षिय उ भाराजिकी स्वा-बल-क्षिय उ भाराजिकी स्वानिष्य विकास

द्वा क्रम् मर्ग्ने न मिता क्रम् हुउ यहां कुर्म् तायत्व-वर्गे विव्रष्टा। क्षं पाम-विद्धिद्ध-करी प्मिम्न भंग पालि भविष्विति भेष-द्वारिशामा

र्वे इक्-पृम्हा विविण भग्न्यी इक्-प्रिष्ठाऽमृपिरिस्-गीडा । इत्त-भुरुपाञ्च उथाऽगिपलानां भाषा पाकि भच्चम्वि भेब-माद्याभा

॥ ७८ मी-का फ्ली-का भके एि-भुला था य-भ ब्रह्म-पीण पी म्वर्केः मीभन्न फा म्वर्तन्-भरभुडी-मी ग्ररण्णे जुं वा भि-वर्ष्टेः मीभस्न न् मापर न्-भरभुडी िः विरागिउं म्बर्गा-पक्क-रङ्गभी॥



कायन वाग्रा भनमिति यैवा वृद्धा प्राज्यसमा वा प्तरः भ्रष्टा वा उर्। करीभि यद्धा यदा मकलं परम् नारायण्य यदा भागा वा भि॥

